IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

प्रेमचंद के उपन्यास में यथार्थवाद

अलका गुप्ता
शोधार्थी
कल्याणी विश्वविद्यालय
पश्चिम बंगाल

सारांश

हिंदी साहित्य में मुंशी प्रेमचंद यथार्थवाद के सबसे सशक्त और प्रभावशाली प्रवर्तक माने जाते हैं। प्रेमचंद ने हिंदी साहित्य को एक नया आयाम दिया। उनसे पूर्व हिंदी साहित्य जासूसी, एयारी और तिलिस्मी रचनाओं से भरपूर था, जीवन की वास्तविकता से उसका कोई सरोकार नहीं था। प्रेमचंद ऐसे पहले साहित्यकार थे जिन्होंने जीवन के यथार्थ को साहित्य के केंद्र में लाया। प्रेमचंद के आरम्भिक उपन्यास 'सेवासदन' से लेकर 'गोदान' की यात्रा में उनके दृष्टिकोण में परिवर्तन देखने मिलता है। वे आरम्भ में आदर्शोन्मुख यथार्थवादी थे लेकिन आगे चलकर वे सामाजिक यथार्थवाद की तरफ मुड़ जाते हैं।

मुख्य शब्द

यथार्थ, यथार्थवाद, जासूसी, एयारी, तिलिस्मी, आदर्शोन्मुख यथार्थवाद, सामाजिक यथार्थवाद।

अध्ययन का उद्देश्य

इस लेख को पढ़कर प्रेमचंद के उपन्यास में यथार्थवाद के स्वरूप को जान पाएँगे एवं सामाजिक जन-जीवन के यथार्थ का बोध कर पाएँगे।

प्रस्तावना

प्रेमचंद हिंदी साहित्य में पहले उपन्यासकार थे, जिन्होंने उपन्यास को मनोरंजन की वस्तु से निकालकर उसके उद्देश्य को विस्तृत किया और उसे भारतीय समाज की यथार्थ भूमि पर लाकर खड़ा किया। उस समय समाज में व्याप्त समस्या उनके संवेदनशील मन को निरंतर प्रेरित करती रही जो उनके रचना का प्रेरणा स्रोत बना। उन्होंने अपने साहित्य विशेष रूप से उपन्यासों में जिन-जिन समस्याओं का यथार्थ चित्रित किया है, वह हमारे समाज में आज इतने वर्षों बाद भी मौजूद है।

विषय-विस्तार

यथार्थवाद की दृष्टि से प्रेमचंद और उनका उपन्यास हिंदी साहित्य में सर्वोच्च स्थान रखता है। उनके आरंभिक उपन्यास 'सेवासदन', 'प्रेमाश्रम', और 'कायाकल्प' आदर्शोन्मुख यथार्थवादी रचना है जहाँ उनके पात्रों में भाववादी हृदय परिवर्तन की भावना प्रबल है लेकिन परवर्ती उपन्यास में उन्होंने जीवन के यथार्थ को चित्रित किया है। उनकी रचना यथार्थवाद की कसौटी पर खड़ी दिखती है। प्रेमचंद ने अपने 'भोगे हुए यथार्थ' को ही साहित्य में जगह दी जिसके परिणामस्वरूप उनकी रचनाएँ इतने वर्षों बाद भी प्रासंगिक बनी हुई है। रामविलास शर्मा उनके विषय में कहते हैं- "वह एक यथार्थवादी कलाकार थे। जीवन की सच्चाई आंकना चाहते थे, जीवन के भ्रमों का खंडन करना चाहते थे। 'सेवासदन' से 'गोदान' तक उन्होंने कथा-साहित्य में यथार्थवाद को इस तरह विकसित किया जिस तरह एक ही साहित्यकार बहुत कम कर पाता है। अपने यथार्थवाद से उन्होंने हिंदी-कथा-साहित्य के लिए वह राजमार्ग बना दिया है, जिस पर नई पीढ़ी के लेखक निर्भय होकर आगे बढ़ सकते हैं।"[1]

'सेवासदन' प्रेमचंद का प्रथम उपन्यास है। इस उपन्यास में प्रेमचंद ने मुख्य रूप से दहेज प्रथा, अनमेल विवाह, भ्रष्टचार, वेश्याओं की सामाजिक स्थिति का चित्रण किया है। उपन्यास की नायिका सुमन दहेज प्रथा का शिकार होती है। सुमन के पिता जब उसके विवाह के लिए लड़का खोजने जाते तब सभी वर पक्ष किसी न किसी रूप से दहेज प्रथा का समर्थन करते- "एक सज्जन ने कहा, महाशय, मैं स्वयं इस कुप्रथा का जानी दुश्मन हूँ, लेकिन क्या करूं, अभी पिछले साल लड़की का विवाह किया, दो हजार केवल दहेज में देने पड़े, दो हजार और खाने-पीने में खर्च पड़े, आप ही कहिए, यह कमी कैसे पूरी हो? दूसरे महाशय इनसे अधिक नीतिकुशल थे। बोले, दरोगा जी, मैंने लड़के को पाला है, सहस्त्रों रूपये उसकी पढ़ाई में खर्च किये हैं। आपकी लड़की को उससे उतना ही लाभ होगा जितना मेरे लड़के को, तो आप ही न्याय कीजिए कि यह सारा भार मैं अकेला कैसे उठा सकता हूँ।"[2] दहेज के अभाव में गजाधर के साथ अनमेल विवाह और मतभेद के कारण सुमन वेश्यावृति अपना लेती है। "'सेवासदन' की मुख्य समस्या भारतीय नारी की पराधीनता है। प्रेमचन्द ने किसी तरह तमाम पुरानी सांस्कृतिक परम्पराओं को तोड़ते हुए वर्तमान समाज में नारी की पराधीनता को अपने निष्ठुर और वीभत्स रूप में चित्रित किया, इस पर सहसा विश्वास नहीं होता।"[3]

प्रेमचंद गाँधी जी की विचारधारा से अत्यंत प्रभावित थे। प्रेमचंद का 'प्रेमाश्रम' उपन्यास गाँधी के असहयोग आन्दोलन की ही पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। यह उपन्यास किसान जीवन के यथार्थ पर आधारित है। लगान चुकाने के बाद भी किसानों की स्थिति दयनीय बनी थी लेकिन अब किसान अपनी स्थिति के प्रति जागरूक हो रहे थे। इस उपन्यास में मनोहर, बलराज ऐसे ही जागरूक किसान के उदाहरण है। बलराज अन्याय का विरोध करते हुए कहता है- "सुन लेगा तो क्या किसी से छिपा के कहते हैं। जिसे बहुत घमण्ड हो, आकर देख ले। एक-एक का सिर तोड़ कर रख दें। यही न होगा, कैद होकर चला जाऊंगा। इससे कौन डरता है? महात्मा गाँधी भी तो कैद हो आये हैं।"[4] यह उपन्यास किसानों और जमींदारों के बीच के संघर्ष का यथार्थ चित्रण करता है।

प्रेमचंद सामन्तवाद से ज्यादा खतरनाक पूंजीवाद को मानते थे। पूंजीवाद के स्वार्थ को उन्होंने 'रंगभूमि' उपन्यास में यथार्थ रूप से दिखाया है। इसके केंद्र में पांडेपुर का सूरदास है, जो गांधीवाद का प्रतिनिधि करता है। सूरदास अंग्रेजी साम्राज्यवाद और पूंजीवाद का विरोध करता है। इसके साथ ही एक दूसरी कथा उदयपुर की सामन्ती वातावरण को दिखाती है। इस उपन्यास में महेन्द्र प्रताप, जॉन सेवक

[1] शर्मा, डॉ. रामविलास, 'प्रेमचन्द और उनका युग', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1952, पृष्ठ संख्या- 150
[2] प्रेमचंद, 'सेवासदन', 1963, हंस प्रकाशन, इलाहबाद, पृष्ठ संख्या- 3
[3] शर्मा, डॉ. रामविलास, 'प्रेमचन्द और उनका युग', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1952, पृष्ठ संख्या- 31
[4] प्रेमचंद, 'प्रेमाश्रम', 2008, अनुपम प्रकाशन, पटना, पृष्ठ संख्या-5

सामन्तवाद के प्रतिनिधि पात्र है। रामविलास शर्मा उनके विषय में कहते हैं-"राजा महेन्द्र प्रताप सिंह- जैसे सामंतवादी लोग जॉन सेवक के सहायक हैं। उसकी औद्योगिक क्रांति से इनका बाल भी बाँका नहीं होता; बल्कि वे इस नई लूट-खसोट में भी शरीक होना चाहते हैं। जॉन सेवक की औद्योगिक क्रांति से नुकसान होता है केवल किसानों का। प्रेमचंद ने 'रंगभूमि' में बड़ी खूबी से दिखलाया है कि ऐसे पूंजीपति, जिनकी सांठ-गांठ ज़मींदारों और राजाओं से होती है, अंग्रेजी राज के परम भक्त और सहायक होते हैं। सूरदास इन सबकी ताकत को चुनौती देता है।"[5]

पूर्वजन्म पर आधारित प्रेमचंद का 'कायाकल्प' उपन्यास यथार्थ की भूमि से थोड़ा दूर प्रतीत दीखता है। उपन्यास की पात्र रानी देवप्रिया अपने प्रत्येक नये प्रेमी को पूर्व जन्म का पति मान लेती है। उपन्यास के अंत में उसका भोग विलास को त्याग अपना कायाकल्प करना अस्वभाविक लगता है।

दहेज प्रथा और अनमेल विवाह के समस्या को दर्शाता प्रेमचंद का 'निर्मला' उपन्यास स्त्री जीवन के यथार्थ को दर्शाता है। यह समस्या हमारे वर्तमान समाज में भी अभी तक विद्यमान है। पिता की मृत्यु के बाद दहेज न होने के कारण तीन बेटों के अधेर पिता तोताराम के साथ निर्मला का अनमेल विवाह का होना, निर्मला के जीवन की त्रासदी बन जाती है और यही त्रासदी उसके मृत्यु का कारण भी बनती है। "'निर्मला' प्रेमचंद के कथा-साहित्य के विकास में एक मार्ग-चिह्न है। यह पहला उपन्यास है जिसमें उन्होंने किसी सेवासदन या प्रेमाश्रम का निर्माण करके पाठक को झूठी सांत्वना नहीं दी। कहानी अपने निर्मम तर्कसंगत परिणाम की तरफ़ अविराम गति से बढ़ती जाती है। उन्होंने कहानी लिखने में यथार्थवाद को पूरी तरह निभाया है।"[6]

मध्यवर्ग के खोखलेपन और दिखावेपन को प्रेमचंद ने 'गबन' उपन्यास में बड़े ही यथार्थ रूप से दर्शाया है। रमानाथ और जालपा के माध्यम से प्रेमचंद ने मध्यवर्गीय जीवन के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला है। जिसमें मध्यवर्ग के झूठे दिखावापन, नैतिक पतन और दाम्पत्य जीवन का विघटन आदि प्रमुख है। "प्रेमचंद रमानाथ जैसे पात्रों के माध्यम से देश के उन तमाम लोगों की असलियत उजागर कर देते हैं जिनमें जिन्दगी की यथार्थ स्थिति को स्वीकार करने की हिम्मत नहीं होती।"[7] इसके साथ ही अनमेल विवाह से उपजे रतन के जीवन की मार्मिकता को भी प्रेमचंद ने बखूबी दिखाया है।

'कर्मभूमि' उपन्यास, प्रेमचंद ने युगीन परिस्थिति जैसे अंबेडकर का मंदिर प्रवेश, गाँधी-इरविन समझौता, सविनय अवज्ञा आन्दोलन की पृष्ठभूमि पर रचा है। इस उपन्यास में प्रेमचंद ने विद्यार्थी और शिक्षक जीवन की समस्या, अछूत की समस्या, व्यापारी तथा मजदूरों की समस्या को अमरकांत, मुन्नी, आत्मानंद, सलीम आदि पात्रों द्वारा चित्रित किया है। गांव का यथार्थ चित्रण करते हुए प्रेमचंद कहते हैं- "तालाब के किनारे वह जो चार-पांच घर मल्लाहों के थे, उनमें तो लोहे के दो-एक बरतन के सिवा कुछ था ही नहीं। मैं समझता था, देहातियों के पास अनाज की बखारें भरी होंगी; लेकिन यहां तो किसी घर में आनाज के मटके तक न थे।"[8] जीवन की वास्तविकता को उन्होंने बहुत करीब से भोगा था और उसी वास्तविकता को उन्होंने अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है। रामविलास शर्मा प्रेमचंद के विषय में कहते हैं- "प्रेमचंद केवल यथार्थ का अक्स उतारनेवाले कलाकार नहीं थे। वे यथार्थ के महत्वपूर्ण पहलुओं को

[5] शर्मा, डॉ. रामविलास, 'प्रेमचन्द और उनका युग', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1952, पृष्ठ संख्या-79
[6] शर्मा, डॉ. रामविलास, 'प्रेमचन्द और उनका युग', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1952, पृष्ठ संख्या-62
[7] दास, डॉ. अजीत कुमार, 'प्रेमचंद के उपन्यासों में ग्रामीण चेतना', पैरोकार पब्लिकेशन, कोलकाता, 2013, पृष्ठ संख्या- 173
[8] प्रेमचंद, 'कर्मभूमि', संस्करण-1997, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-361-362

परखकर उन्हें उपन्यास में विशेष स्थान देते थे। यही सबब है कि 'कर्मभूमि' में वह सबसे ज़्यादा ज़ोर ज़मीन की समस्या, लगान कम करने की समस्या, खेत-मज़दूरों और गरीब किसानों के लिए ज़मीन की समस्या पर देते हैं।"[9]

प्रेमचंद ने 'गोदान' की रचना कर भारतीय किसान जीवन का महाकाव्य रच डाला। उपन्यास में उन्होंने ग्रामीण और शहरी जीवन का यथार्थ चित्र उकेरा है। 'होरी' किसानों का प्रतिनिधि पात्र है जो अपने द्वार पर एक गाय रखने की इच्छा भी पूरी नहीं पाता। होरी और गोबर का प्रसंग दो पीढ़ियों के मूल्यों के टकराव को दर्शाता है। ब्राह्मण मातादीन और दलित सिलिया का प्रेम प्रसंग समाज में दलित स्त्री की दशा को दर्शाता है। मेहता के माध्यम से उन्होंने अपने विचारों और रायसाहब के माध्यम से उन्होंने सामन्ती सभ्यता का पतन दर्शाया हैं।

निष्कर्ष

अतः प्रेमचंद के उपर्युक्त मुख्य उपन्यासों के आधार पर हमें प्रेमचंद के यथार्थवादी दृष्टिकोण का पता चलता है। वास्तव में प्रेमचंद हिंदी साहित्य में यथार्थवाद के प्रवर्तक है। उन्होंने उत्तर भारत के ग्रामीण जीवन के साथ-साथ महानगरीय जीवन के भी विभिन्न पहलुओं को अपने पैनी यथार्थवादी दृष्टि से देखा। उन्होंने भारत की सामाजिक समस्याओं को दिखाते हुए उसके समाधान के तरफ इशारा किया है।

[9] शर्मा, डॉ. रामविलास, 'प्रेमचन्द और उनका युग', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1952, पृष्ठ संख्या- 81